सुख किसमें? भौतिक उन्नति या नैतिक प्रगति

भारत मुख्य रुप से दो अलग–अलग विचारधाराओं पर चलता रहा है–(1)पश्चिम की भौतिक प्रगति की विचारधारा(2)भारत की आध्यात्मिक प्रगति की विचारधारा जिसे धार्मिक या नैतिक भी कहा जा सकता है। आमतौर पर भारतीय विचारधारा लगातार कमजोर हो रही है तथा पाश्चात्य भौतिक विचारधारा आगे बढ़ रही है। यदि हम भारत में भी कुछ घटनाओं की तुलनात्मक समीक्षा करें तो हमें निष्कर्ष तक पहुचने में कुछ मदद मिलेगी। मैं इस लेख के माध्यम से पॉच घटनाओं को मिलाकर आपके समझ एक प्रश्न छोड़ रहा हूॅ कि उचित क्या है। इसमें मैं सबसे पहले अपनी बात बताउॅगा कि सन्1955 में ही मैं आध्यात्म की ओर झुक गया था और जल्दी ही मुझे आभाष हुआ कि यह मार्ग अपूर्ण है। उस समय मुझे आर्य समाज ने मुझे अग्रवाल वर्ण जाति से निकालकर ब्राहमण बना दिया था, और मैं स्वयं को ब्राहमण मानता रहा जो आज तक रहा। किन्तु एक दो वर्षो के बाद ही मुझे अपने विचार में आंशिक संशोधन करना पडा, और मैं ब्राहमण होते हुए भी सामाजिक राजनीति में सक्रिय हो गया। मेरे कारण मेरे परिवार के लोगों ने अभूतपूर्व आर्थिक कष्ट सहे और जब 1995 में मेरा पारिवारिक नेतृत्व बदला तब मेरा पूरा परिवार फिर से व्यवसाय की दिशा में चला गया। मैं आज तक एक विचारक ही रहा और पूरे परिवार के लोग व्यवसायी। आज भी हम परिवार के लोग बैठकर यह तय नही कर पाते है कि दोनों में से कौन सी लाईन ठीक है? मेरा परिवार यह मानता है कि सम्मान की दृष्टि से मैं उन सबकी अपेक्षा आज भी बहुत उपर हूॅ। इतना उपर कि उन्हें गर्व होता है। दूसरी ओर मैं यह मानता हूॅ कि यदि परिवार मेरी राह पर अब तक चला होता तो यह भी संभव था कि उनकी हिम्मत टूट जाती और परेशानियों के प्रभाव में विद्रोह भी हो सकता था।

मेरे एक निकट के मित्र है जो मेरे पडोसी भी है। काफी समझदार क्रियाशील व्यक्ति रहे है। उन्होने पाश्चात्य की भौतिक दिशा में तेजी से बढ़ना शुरु किया। अमेरिका में रहकर बहुत धन कमाया। सुविधा के मामले में बहुत सम्पन्न हैं। पारिवारिक मामले में पति पत्नि बिल्कुल अलग अलग रहते है। बच्चों के संस्कार भी भौतिक दिशा में पले हुए है। पिता पुत्र के संबंध भी सिर्फ आर्थिक है। देखकर लगता है कि पूरा परिवार बहुत सुखी है लेकिन अन्दर अन्दर एक प्रत्यक्ष पीडा दिखाई देती है। एक तीसरी चर्चा करें राहुल गॉधी की। राहुल गॉधी बहुत अधिक समझदार और सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी हैं। राहुल गॉधी झूठ नही बोलना चाहते, चालाकी नहीं कर सकते। कूटनीति का ज्ञान नहीं है और मेरे विचार में उनके अन्दर एक वास्तविक गॉधी के गुण मौजूद हैं। राहुल गॉधी राजनीति से दूरी बनाकर रखना चाहते थे। किन्तु सोनिया जी ने लगातार समझा समझाकर राहुल को राजनीति की ओर खींच दिया। अब राहुल गॉधी राजनीति कर रहे है। बिल्कुल साफ दिखता है कि राजनीति राहुल गॉधी के बस की बात नही किन्तु जबरदस्ती से राजनीति सीखने का प्रयत्न कर रहे है। माया मिली न राम की कहावत चरितार्थ हो रही है। पिछले कई महिनों में हम उनकी असफलता को देख रहे है। स्वयं कांग्रेस पार्टी के भी अधिकांश लोग अनुभव कर रहे है कि राहुल राजनीति नही कर पायेंगे। इसका अर्थ है कि वे स्वयं भी डूबेंगे और पार्टी को भी डूबायेंगे,साथ ही राहुल गॉधी की योग्यता से देश और समाज को जो लाभ मिलता उससे भी हम वंचित रहेंगे। किन्तु भौतिक प्रगति के मोह में सोनिया ऐसा गलत निर्णय ले रही हैं । एक चौथी घटना अभी अभी घटी है जिसमें इन्द्राणी मुखर्जी नाम की एक महिला भौतिक प्रगति की ओर बहुत तेज गति से सरपट दौड़ रही है उसने इस दौड में अन्य सबको पछाड़ दिया। उसने कई कई शादिया कर ली,कई दिशाओं से बच्चे पैदा हुए, भौतिक उन्नति की दिशा में तेजी से बढ़ती गई, आर्थिक और भौतिक सम्मान में डूबी रही और उसका कैसा अन्त हुआ यह सब देख रहे है। उसके साथ जुडे लोग भी आज कतराने लगे है। भौतिक उन्नति की दौड़ में न उसने पति, पुत्र, माता, पिता के संबंधो को जिंदा रखा न ही किसी कानूनी संबंधो से कभी भय खाया। यहॉ तक कि षड़यंत्र करते करते वह हत्या तक चली गई।

एक पाचवा चरित्र भी हम लगातार देख रहे है जिसमें आशाराम बापू ने आध्यात्म की भारतीय दिशा के कपडे पहनकर बहुत तेजी से भौतिक दिशा में बढ़ने का प्रयास किया । उन्होंने भौतिक दिशा में बढ़ने के लिए सारे प्रयत्न किये और लगातार बचते चले गये। जिस अपराध में वे जेल में बंद है वह कोई बहुत बडा गम्भीर अपराध नहीं है फिर भी आज भौतिक रुप से सर्वसुविधा युक्त होते हुए भी उनकी हालत दयनीय हो गई है,क्योकि उन्होने आध्यात्म के कपड़े पहनकर समाज को भौतिक दिशा में जाने का धोखा दिया।

उपर के पॉच उदाहरण अलग अलग भूमिका के है। स्पष्ट है कि सिर्फ आध्यात्म की लाईन भौतिक रुप में बहुत कठोर परीक्षा खोजती है जिसमें अधिंकाश लोग फेल होकर राहुल गॉधी की तरह असफल हो जाते है आध्यात्म को बिल्कुल छोडकर भौतिक दिशा में तेजी से बढ़ने वाले इन्द्राणी मुखर्जी के परिणाम भी बहुत दुखद रहे। आध्यात्म का ढ़ोंग करके भौतिक दिशा में तेज प्रगति करने वाले आशाराम बापू की नाव भी मजधार में है। आध्यात्म की दिशा में धीरे धीरे कदम बढ़ाने वाले मेरे मित्र ने भी जो भौतिकता की राह पकडी वह भी बहुत कष्टकारक है। ऐसी स्थिति में मैं यह समझता हूॅ कि भौतिकता और सामाजिकता के समन्वय से चलने वाला मेरा परिवार अन्य उदाहरणों की अपेक्षा अधिक सुखी है। मैं अपने मित्रों को सलाह देता हूॅ कि भौतिकता की अंधी दौड़ को सामाजिकता के साथ जोड़कर नियंत्रण में रखना चाहिए। यदि नियंत्रण नही रहेगा तो भौतिकता की दौड़ में इतना मीठा स्वाद आता है कि उसके परिणामों की चिंता किये बिना व्यक्ति तेज से तेज दौड़ लगाता है और परिणाम होता है कि झटका आते ही उसका सारा जीवन दुखी और कलंकित हो जाता है।

(1) लोकेश कुमार सिंह,कानपुर,उ0प्र0 ज्ञानतत्व 4984

प्रश्नः—सर्वप्रथम हिन्दू और मुस्लिम कट्टरवाद पर आपकी बेबाक राय एवं विचारों से मुझे तथा सभी पाठकों को एक निश्चित दिशा में सोचने का मौका मिल रहा है। मैं आपकी इस बात से तो सहमत हूॅ कि सत्ता पर तानाशाह के काबिज होने से लोक स्वराज्य जैसी व्यवस्था का मार्ग जल्दी उपलब्ध हो सकता है लेकिन मोदी जी के अन्दर तानाशाही के गुण तो रचे बसे हैं ही जिससे उन्हें पूरे देश या विश्व के परिदृश्य में अपने समकक्ष कोई शासक या नेता नहीं दिखता है। बल्कि उनके पहनावे और आस पास के वातावरण से भी ऐसा ही प्रतीत होता है और इसी कड़ी में मौजूदा समय में जिस प्रकार के अवरोध संसद को चलाने में आ रहें है इसके लिए अगर सबसे बडी जिम्मेदारी किसी की है तो सत्ता पक्ष और सत्ता के नायक नरेन्द्र मोदी जी की है। संसद में गतिरोध खत्म होने का कारण प्रधानमंत्री जी द्वारा ललित मोदी प्रकरण या व्यापम घोटाले पर कुछ न बोलने की जिद पकड़ना है। यहॉ तक कि उन्होने संसद के बाहर भी कुछ नहीं बोला बल्कि संसदीय कार्य मंत्री श्री बैंकैया नायडू का यह कहना कि भाजपा के किसी केन्द्रीय मंत्री या मुख्यमंत्री ने कोई अवैध या अनैतिक काम नही किया है। जबकि व्यापम घोटाले में सैकडों गिरफ्तारियॉ हो चुकी है,जिसमें शिवराज जी के करीबी अधिकारी भी शामिल है। आखिर संसदीय कार्य मंत्री जी शिवराज सिंह चौहान को कैसे क्लीनचिट दे सकते है? क्या इससे सुप्रीम कोर्ट के निगरानी में सी.बी. आई को सबूत इकट्ठा करने में भ्रमित या प्रभावित करने का प्रयास नही माना जाना चाहिए? असल में पूरे राज्य का यह शर्मनाक रवैया संभवतः नरेन्द्र मोदी के ही इशारे पर किया गया है।

इसी प्रकार से नरेन्द्र मोदी जी विभिन्न प्रकार से सत्ता (केन्द्रीय) तक पहुचने के पहले जुमले और झूठे प्रलाप करते रहे, तथा सत्ता तक पहुॅचने के बाद भी कभी स्वच्छता के नाम पर तो कभी विभिन्न प्रदेशों में चुनावों के नाम पर आखिर देश की शीर्ष सत्ता तक पहुॅचे। इतना समय हो चुका है कि कम से कम वास्तविक स्थिति का ज्ञान तो हो ही गया होगा, और इनके क्रियाकलाप देखने के बाद भी आपको यदि नरेन्द्र मोदी जी से कुछ विशेष करने की उम्मीदें हैं और सत्ता में बने रहने के लिए जितना आवश्यक है उससे अधिक करने की उम्मीद व अन्य राजनैतिक व्यक्तियों से भिन्न मानते हैं तो मुझे आश्चर्य है। कृपया मेरा मार्ग दर्शन करें। ज्ञानतत्व मुझे बराबर प्राप्त हो रहा है। और मैं व्यवस्थापक तथा लोकस्वराज सम्बंधी आन्दोलन के लिए कुछ जिम्मेदारी उठाना चाहता हूॅ।

उत्तरः—मैं पिछले 20–30 वर्षो से लगातार लिख रहा हूॅ कि समस्याओं के समाधान के लिए या तो तानाशाही एक खराब विकल्प है अथवा लोकस्वराज्य, एक अच्छा विकल्प। पश्चिम के देश आंशिक रुप से लोकस्वराज्य की दिशा में झुके हुए लोकतंत्र के पक्षधर हैं तो दक्षिण एशिया के देश तानाशाही की दिशा में झुके हुए लोकतंत्र पर काम करते रहें है। भारत में 67 वर्षो से जैसा लोकतंत्र सक्रिय रहा है उसका परिणाम अव्यवस्था ही होना था और वह अव्यवस्था हुई। यदि लोकतंत्र लोकस्वराज्य की दिशा में नहीं बढ़ता और अव्यवस्था बढ़ती जाती है तो आम लोगों के मन में तानाशाही के प्रति समर्थन की भूख बढ़ती जाती है। नरेन्द्र मोदी के चुनाव के बहुत पहले ही यह स्पष्ट हो गया था कि मोदी तानाशाही की दिशा में बढ़ेंगे और समस्याओं का समाधान होगा। यह बात मैं आज चुनाव के बाद नहीं कह रहा हूॅ बल्कि लोकसभा चुनावों के करीब चार महिने पहले ही ज्ञानतत्व 282 में मैंने यह घोषणा कर दी थी। वह अंक मैं पुनः आपको भेज रहा हूॅ । कांग्रेस पार्टी की दुर्गति

का एकमात्र कारण सोनिया गॉधी के पुत्र मोह में छिपी तिकड़म से जोड़कर देखना चाहिए। मैं पिछले कई वर्षो से यह स्पष्ट करता रहा हूॅ। यदि सब कुछ समझते हुए भारत की जनता ने खान्दानी राजनीति के स्थान पर तानाशाही के खतरे का चयन किया तो अब पॉच वर्ष देखने में क्या है? मैं तो देख रहा हूॅ कि पिछले एक वर्ष में नरेन्द्र मोदी के आने के बाद पिछली सभी सरकारों की अपेक्षा कई गुना अधिक अच्छे काम हुए है। मुझे आपके प्रश्न में यह बात पक्षतापूर्ण लगी कि संसद को चलाना सिर्फ सत्ता पक्ष की ही जिम्मेदारी है। जिस तरह आप मेरे नरेन्द्र मोदी के समर्थन से आश्चर्य चकित है, उसी तरह मैं भी आपके खान्दानी शासन प्रणाली के समर्थन से आश्चर्य चकित हूॅ। मुझे तो चुनाव नतीजे देखकर भी आश्चर्य हुआ था कि नेहरु खान्दान को सब कुछ समझते हुए भी भारत में चालीस पैंतालीस सीटे मिल गई। जिस तरह सोनिया और राहुल मिलकर संसद को बंधक बनाये हुए है उससे तो ऐसा लगता है कि इन्हें शून्य तक पहुचने में पॉच वर्ष भी नहीं लगेंगे। इनका यह सोचना गलत है कि कांग्रेस शासन में संसद को न चलने देकर ही भाजपा चुनाव जीत सकी है। यदि भाजपा ने ऐसी गलती न की होती तो उसे और अधिक समर्थन मिल सकता था। प्रश्न यह नही है कि मुझे मोदी से कोई ज्यादा उम्मीदें है। मैं तो ऐसा समझ रहा हूॅ कि नरेन्द्र मोदी ने जो कुछ किया है उसे देखते हुये अन्य राजनैतिक दलो के विषय में कुछ कहने की सोचने की आवश्यकता ही नही है, पिछले 67 वर्षो के शासन में लोकस्वराज्य की जो अवहेलना हुई उसका कारण उन शासकों की खराब नीयत में देखा जाना चाहिए। यदि पिछले खराब नीयत के लोग लोकस्वराज्य नहीं दे सके तो किसी अच्छी नीयत वाले तानाशाह को पॉच वर्ष देखना घाटे का सौदा नहीं है।अंक 282 का पुराना लेख इस प्रकार है–जो चुनावो से चार महिने पहले लिखा गया था

राजनीति मे राहुल गॉधी

मैं राजनीति में हमेशा ही सोनिया गॉधी का प्रशंसक रहा हूॅ। सोनिया जी ने जिस तरह प्रधानमंत्री पद के लिए स्वयं को पीछे करके मनमोहन सिंह को आगे बढाया, वह घटना उनके त्याग की प्रशंसा के लिए पर्याप्त है। व्यक्तिगत आचरण मे भी सोनिया बहुत खरी उतरी। सामाजिक सोच भी उनकी ठीक ठाक रही है, किन्तु पिछले 3–4 वर्षों से जिस तरह सोनिया जी पुत्र मोह में सब कुछ भूल बैठीं, उससे मेरा मन सोनिया जी के प्रति बहुत खट्टा हो गया। ऐसा लगा जैसे कि यूपीए–2 का कार्यकाल शुरू होते ही सोनिया जी ने राहूल गॉधी को प्रधानमंत्री बनाने की तिकडम शुरू कर दी। सोनिया जी ऐसा मानती थी कि भारत की जनता बहुत भोली भाली है। वह सोनिया जी की इतनी तिकडमो को नही समझ पायेगी। सोनिया जी के आसपास रहने वाली चापलूसो की टीम भी सोनिया गॉधी जी को यही समझाती रही कि जनता इतनी समझदार नही है। लेकिन पॉच राज्यों के चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया कि जनता सब कुछ समझती है। खासकर सोनिया गॉधी जी की इस तिकडम को तो बहुत अच्छी तरह समझ गई है। इन चुनावों के बाद जनता के इशारे कॉग्रेंस के सब लोग समझ गये, सिर्फ सोनिया गॉधी को छोडकर। सोनिया जी भी कैसे समझे क्योंकि पुत्र मोह में उन्हें राहुल गॉधी प्रधानमंत्री के अतिरिक्त तो कुछ दिखाई नही दे रहा है।

वैसे तो सोनिया जी ने मनमोहन सिंह के उपर एक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद बनाकर उसमे जैसे–जैसे लोगों का चयन किया, वह चयन मनमोहन सिंह को भी कमजोर करने के लिए पर्याप्त था, और भारत की अर्थव्यवस्था को भी रसातल तक ले जाने वाला था। सोनिया गॉधी जी की यह चाल सफल हुई। मनमोहन सिंह लगातार बदनाम होते चले गये तथा अर्थव्यवस्था भी रसातल तक नीचे चली गई। चाहे विकास दर हो या मुद्रास्फीति अथवा डॉलर रूपये का विनिमय मूल्य। सभी जगह अर्थव्यवस्था गिरती गई। सारा खेल सोनिया गॉधी जी का खेला हुआ था तथा मनमोहन सिंह बदनाम हो रहे थे। सोनिया गॉधी जी को यह आभाष नही था, कि मनमोहन सिंह के साथ कॉग्रेंस पार्टी भी उखडती जा रही है। लेकिन पॉच राज्यों के चुनावों में कॉग्रेंस पार्टी जिस तरह साफ हुई उससे यह स्पष्ट दिखने लगा कि 2014 का चुनाव निर्णायक होगा, जिसमें कॉग्रेस पार्टी को शमशान तक पहुंचाने का श्रेय सोनिया गॉधी जी के खाते में जाएगा। मैंने पिछले चार वर्षों से लगातार सोनिया जी को सर्तक किया, कि वे मनमोहन सिंह को बदनाम करके राहुल गॉधी को आगे लाने का खतरनाक खेल खेल रही है। मैं उस समय भी मनमोहन सिंह को अच्छा प्रधानमंत्री मानता था और अब भी मानता हूॅ, किन्तु जिस तरह मनमोहन सिंह को बदनाम किया गया, उससे अब मनमोहन सिंह का प्रधानमंत्री बनना संभव नही है। मैंने दूसरे क्रम में नीतिश कुमार को रखा था। तीसरे क्रम में अरविन्द केजरीवाल को और चौथे क्रम में नरेंन्द्र मोदी को। मैंने उस समय यह लिखा था कि यदि इन चारों के अतिरिक्त कोई और आ सकता है तो विचार किया जा सकता है। लेकिन इस बीच में राहुल गॉधी का प्रवेश होता है तो पूरी ताकत से सबको मिलकर राहुल गॉधी को हरा देना चाहिए। और यदि आवश्यक हो तो पूरी कॉग्रेंस

का भी सफाया करने में कोई हर्जा नही है। प्रश्न राहुल गॉधी की योग्यता का नही है, प्रश्न तो भारत की जनता के उपर एक परिवार द्वारा प्रधानमंत्री थोप देने के कलंक का है। राहुल गॉधी का प्रधानमंत्री बनना भारतीय राजनीति पर एक कलंक के अतिरिक्त कुछ नही है, क्योंकि इस तरह सत्ता, तिकडम करके अपने परिवार तक आरक्षित कर ली जाए, यह भारत की जनता के लिए कलंक के अलावा और क्या हो सकता है? मैने ज्ञानतत्व अंक 252 दिनाकॅ 15–31 अगस्त 2012 मे अपने मनोभाव प्रकट करते हुए यह बात लिखी थी। उस ज्ञानतत्व का लेख भी इस अंक में पुनः प्रकाशित कर रहा हूॅ। मैं नही कह सकता कि कॉग्रेस पार्टी के वर्तमान पतन में मेरे विचारों की कितनी भूमिका है और कितना समाज का मनोभाव मैंने अपने लेख में किया है? किन्तु इतना स्पष्ट है कि वर्तमान राजनैतिक वातावरण में राहुल गॉधी का रसातल तक का पतन निश्चित है। कहीं ऐसा न हो जाए कि राहुल गॉधी तो जाऍगें ही साथ ही साथ कॉग्रेंस पार्टी को भी डुबा कर जावें।

यदि सोनिया जी अपने परिवार के ही व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाने की तिकडम नही करती तो संभव था कि राहुल गॉधी एक बहुत ही योग्य राजनेता के रूप मे उभरकर सामने आते। प्रश्न राहुल गॉधी की योग्यता के ऑकलन का नही है, बल्कि प्रश्न तो नेहरू परिवार के व्यक्ति के प्रधानमंत्री बनने के कलंक का है। देश की जनता इस कलंक से मुक्त होना चाहती है। पूरा भारत जानता है कि इस परिवार ने प्रधानमंत्री पद की तिकडम के लिए किसी अन्य को न आगे आने दिया, न स्थापित होने दिया। अब भारत की जनता के पास स्पष्ट अवसर है कि वह इस परिवार की तिकडमों से मुक्त हो जाए। स्पष्ट दिखता है कि सोनिया जी एक मात्र वह हस्ती हैं जो कॉग्रेंस पार्टी को डुबा भी सकती है और उबार भी सकती है। यदि अब भी सोनिया जी यह स्पष्ट घोषणा कर दें कि अगले दस वर्षों तक भारत में किसी भी रूप में नेहरू परिवार का कोई व्यक्ति प्रधानमंत्री नही बनेगा, पूर्ण बहुमत में आने के बाद भी नही बनेगा, तब तो कॉग्रेंस पार्टी डूबने से बच सकती है, अन्यथा कॉग्रेंस पार्टी को डूबने से कोई नही बचा सकता। मुझे लगता है कि सोनिया जी की ऑखों पर प्रधानमंत्री पद अपने परिवार तक आरक्षित करने का जो चश्मा लगा हुआ है, वह चश्मा उतारकर वे सच्चाई को देखने का प्रयास करेगी और परिणाम जो होना है वही होगा। यह कहना गलत है कि भाजपा जीत गई या मोदी की लहर है, यदि मोदी की लहर होती तो दिल्ली के चुनावों में अरविन्द केजरीवाल का भी सफाया हो जाना चाहिए था, किन्तु लहर मोदी की नही है। लहर तो नेहरू परिवार से प्रधानमंत्री पद को मुक्त कराने की है। यह अलग बात है कि इस मुक्ति संग्राम में कौन आगे आता है। नरेंन्द्र मोदी, अरविन्द केजरीवाल या कोई अन्य।

सोनिया जी पुत्र मोह में पडकर जो कुछ कर रहीं है, वह राहुल गॉधी के लिए भी बहुत हानिकारक है। अब तक राहुल गॉधी ने जो मार्ग पकडा है, वह उनको स्थापित करने के लिए अन्य राजनेताओं की अपेक्षा बहुत अच्छा है। यदि राहुल गॉधी प्रधानमंत्री पद का लालच छोडकर कॉग्रेंस अध्यक्ष तक सीमित हो जाते तो उनकी प्रतिष्ठा बढ सकती थी, किन्तु ऐसा लगता है कि सोनिया जी के चक्कर मे पडकर राहुल गॉधी अपना भविष्य सदा के लिए बिगाड लेंगें। मेरे विचार मे किसी भले आदमी के लिए ऐसा परिणाम बहुत बुरा होगा किन्तु मैं इसमे कुछ नही कर सकता क्योंकि राहुल गॉधी का भविष्य बनाना–बिगाडना सिर्फ और सिर्फ सोनिया जी के हाथ मे है। अगले चार महीने इस संबंध मे निर्णायक होने वालें हैं।

यह दूसरा लेख ज्ञानतत्व अंक 252 दिनॉक 15–31,अगस्त 2012 मे छपा था, जो प्रसंगवश दुबारा दिया जा रहा है।

भारतीय लोकतंत्र के लिये सबसे बड़ा खतरा .....!

राहुल गांधी बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार हो गये हैं। वे मान गए हैं कि बड़ी जिम्मेदारी उठाने के लिए उनके कंधे तैयार हैं। तब इस बात की पूरी संभावना है कि 2014 में होने वाले आम चुनावों में उन्हें प्रधानमंत्री पद के लिए प्रस्तुत किया जाएगा। अगर ऐसा होता है तो यह लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा होगा। वर्तमान समय में अगर कोई चीज लोकतंत्र की सबसे बड़ी शत्रु है तो वह है देश के प्रधानमंत्री पद का किसी एक परिवार के लिए आरक्षित हो जाना। राहुल गांधी को जिस तरह से झाड़ पोंछकर प्रधानमंत्री पद के लिए तैयार किया गया है उससे वे देश के लोकतंत्र के सबसे बड़े शत्रु बन गये हैं।

आज के राजनीतिक वातावरण को देखते हुए लगता है, कि प्रधानमंत्री पद गांधी नेहरू परिवार की संपति हो गई है। जिस पर वे अपने ही परिवार के किसी सदस्य को देखना चाहते हैं। स्वतंत्रता के बाद से ही चली आ रही परिवारवाद की यह समस्या आज देश की सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। गांधी परिवार में ऐसी कोई विशेषता नहीं है जिसके बिना इस देश का काम न चल सके। एक विकार की तरह कांग्रेस में यह विचार हमेशा प्रभावी रहा है कि योग्यता का मतलब होता है प्रधानमंत्री का पद और प्रधानमंत्री के पद का मतलब होता है नेहरू गांधी वंश परंपरा। यह विकार कितना विकराल हो गया है इसका उदाहरण सत्यव्रत चतुर्वेदी के उस बयान से भी पता चलता है जिसमें वे बड़ी बेशर्मी से कहते हैं कि प्रधानमंत्री पद की योग्यता अब नेहरू गांधी परिवार के रक्तबीज में समा गयी है।

कांग्रेस में परिवारवाद की यह समस्या आज से ही नहीं बल्कि स्वतंत्रता के बाद से ही चली आ रही है। जब नेहरू प्रधानमंत्री पद पर आसीन थे तो उन्होंने किसी दूसरे व्यक्ति को आगे बढ़ाने के बजाय अपनी बेटी इंदिरा गांधी को आगे बढ़ाया जबकि इंदिरा में उस समय कोई असामान्य खासियत नहीं थी। इंदिरा के बाद राजीव गांधी आए और उनके बाद सोनिया गांधी एक तरह से कांग्रेस सरकार में देश चला रही हैं। सोनिया के बाद राहुल को भी उसी पथ पर आगे बढ़ाया जा रहा है, जिस पर उनके परिवार वाले चले हैं। उनको प्रधानमंत्री बनने की शिक्षा बहुत पहले से दी जा रही है। अब उसका परिणाम देखने का समय आया है।

कांग्रेस नेतृत्व इस बात का भी पूरा ध्यान रखता है कि जब इस तरह का कोई निर्णय ले तो कोई विरोध का स्वर न उठे। इसके लिए वह पार्टी में ऐसे लोगों को संरक्षण देता है जो उनके फैसलों के पीछे हमेशा सिर हिलाये। कांग्रेस पार्टी उन्हें उंचा ओहदा देती है जिससे वे मुश्किल घड़ी में हमेशा उनका साथ देते हैं। नेहरू गांधी परिवार हमेशा अपने आसपास एक चौकड़ी निर्मित करके रखता है। समय समय पर यही चौकड़ी नेहरू गांधी परिवार की वंदना करके उनको प्रासंगिक बनाये रखती है। अब जिन पर कांग्रेस ने इतने एहसान किए हो वे उनके खिलाफ कैसे जा सकते हैं। नेहरू परिवार और ये उनके संरक्षण में पलने वाले लोग एक दूसरे के पूरक हैं। लेकिन यह प्रवृति कांग्रेस के आंतरिक लोकतंत्र के लिए भी घातक है। क्योंकि यदि राहुल प्रधानमंत्री बनते हैं तो कांग्रेस अध्यक्ष की कुर्सी कौन संभालेगा। यह सवाल बरकरार है। वैसे तो सोनिया जी हैं ही या यदि ज्यादा ही लोकतंत्र का ढोंग करना हुआ तो अभी से दिग्विजय सिंह, सलमान खुर्शीद, सत्य व्रत चतुर्वेदी सरीखे लोग लाइन लगने में खड़े हो चुके हैं।

गांधी नेहरू परिवार ने महात्मा गांधी के नाम का इस्तेमाल कर राजनीतिक सफलता तो अर्जित कर ली, लेकिन उन्होंने गांधी जी के विचारों को तिलांजलि दे दी। नेहरू परिवार ने समाज को रास्ता दिखाया, लेकिन उस रास्ते पर चलने से वे खुद कतराते रहे। उन्होंने गांधी के मरते ही उनके विचार को भी त्याग दिया। जब गोडसे ने गांधी को मारा तो भले ही उसका कर्म भी गलत था, और निर्णय भी लेकिन यही बात उसकी नीयत के बारे में नहीं कही जा सकती। क्योंकि उसके विचार दोषी हो सकते हैं लेकिन उसकी नीयत नहीं। नेहरू के बारे में यही बात थोड़ी उलटी है। उनके कर्म और निर्णय भले ही सही हो परन्तु नीयत पर सवाल उठना लाजमी है।

सवाल यह भी उठता है कि अगर राहुल इतने योग्य व्यक्ति हैं तो उन्हें कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बना दिया जाए। यहां तक कि महात्मा गांधी की जगह बैठा दिया जाए तो कोई लोकतंत्र विरोधी बात नहीं होगी। लेकिन प्रधानमंत्री ही क्यों? क्या कांग्रेस की नजर में योग्यता का अर्थ प्रधानमंत्री की कुर्सी मात्र है? या गांधी नेहरू परिवार का अंतिम लक्ष्य ही प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंचना है? प्रधानमंत्री के पद पर अगर किसी एक ही परिवार के लोगों का कब्जा बना रहे तो लोकतंत्र का झुकाव राजशाही की ओर बढ़ता जाता है।

भारत जैसे लोकतंत्र के लिए यह बात भी खतरनाक है कि संविधान संशोधन का अधिकार संसद के पास है जिससे सरकार की तानाशाह बनने की आशंका हमेशा बनी रहती है। अगर सरकार कोई ऐसा संशोधन कर दे जिससे उसकी अवधि ज्यादा लंबी हो जाए तो लोकतंत्र को राजतंत्र बनने से रोक पाना मुश्किल होगा। इसकी थोड़ी सी झलक आपातकाल के दौरान जनता देख चुकी है। संविधान संशोधन के लिए एक अलग इकाई का होना अनिवार्य है, जिससे जनता की स्वतंत्रता को कोई खतरा न हो।

जो लोग मनमोहन सिंह की आलोचना करते हैं और उन्हें सिर्फ नेहरू गांधी परिवार के लिए उन्हीं की पसंद का प्रधानमंत्री बताते हैं वे लोकतंत्र से मजाक कर रहे हैं। मनमोहन सिंह की प्रशंसा की जानी चाहिए। इसलिए भी क्योंकि उन्होंने नेहरू गांधी परिवार की परिधि से प्रधानमंत्री पद को बाहर रखा और कांग्रेस का शासन होने के बाद भी। गैर नेहरू गांधी परिवार का होने के बावजूद प्रधानमंत्री के पद पर दो बार आसीन हुए, लेकिन इसके साथ ही मनमोहन सिंह की इस लिए भी तारीफ की जानी चाहिए कि उन्होंने नेहरू के उस समाजवादी आर्थिक ढांचे को भी ध्वस्त करने का काम किया जिसके सहारे नेहरू गांधी परिवार आर्थिक तरक्की का दंभ भरता रहा। नेहरू के इसी आर्थिक मॉडल के सहारे समाजवाद लाने और गरीबी हटाने की अनेक कोशिश की गई लेकिन वे इसमें कामयाब नहीं हुए।

ऐसा लगता है कि फल के परिपेक्ष्य को देखते हुए किसी षड़यंत्र के अर्न्तगत जिसमें सुषमा स्वराज सहित भाजपा का बड़ा वर्ग भी शामिल है, उन्हें आज बदनाम कर रहा है। अगर वास्तव में नेतृत्व में कमी है तो सोनिया गांधी की भी आलोचना होनी चाहिए। मनमोहन सिंह की नहीं। भ्रष्टाचार को रोकने का सबसे सही तरीका है निजीकरण जिसका हमेशा मनमोहन सिंह ने

पक्ष लिया है। वे ही 1991 के उदारीकरण के जनक भी माने जाते हैं। लेकिन लगता है उन्हें रास्ते से हटाने के लिए उनकी बदनामी की जा रही है। हो सकता है राहुल गांधी में बहुत सारे ऐसे गुण हो जिसका लाभ उनकी पार्टी को मिल सकता हो लेकिन प्रधानमंत्री पद के लिए उनको प्रस्तावित करना देश के लोकतंत्र के लिये खतरा पैदा करना है। अगर इस तरह प्रायोजित तरीके से राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद पर आसीन कर दिये जायेंगे तो वे लोकतंत्र के सबसे बड़े शत्रु बन जायेंगे।

प्रश्न उठता है कि हम भारतीय मतदाता इस खतरे को टालने के लिये क्या कर सकते हैं? कांग्रेस पार्टी तो एक चौकडी की गुलामी है जिसे नेहरू गांधी परिवार हमेशा बनाता बिगाडता रहता है। भारतीय जनता पार्टी की संघ परिवार से मुक्ति हो नहीं सकती। विदित हो कि संघ परिवार की तो जन्मघुट्टी ही केन्द्रित शासन प्रणाली से शुरू होती है। दलो के रूप में कोई दिखता नहीं। व्यक्तियों के रूप में चार व्यक्ति दिखते हैं जिनमें से कोई एक यदि आगे बढ़ाया जा सके तो इस खतरे से बचा जा सकता है। 1. मनमोहन सिंह 2. अरविन्द केजरीवाल 3. नीतिश कुमार 4. नरेन्द्र मोदी। यदि मनमोहन सिंह को दस प्रतिशत भी समर्थन बढ़ जावे तो सोनिया जी ऐसा खतरा न उठाकर मनमोहन सिंह पर ही दांव लगाने को मजबूर हो सकती हैं। यदि अरविन्द जी और नीतिश जी पर विचार करे तो अभी समय बाकी है। यदि नरेन्द्र मोदी पर विचार करें तो सर्वाधिक आसान और खतरनाक मार्ग है। नरेन्द्र मोदी देश की सभी समस्याओं के समाधान के लिये तो सर्वाधिक उपयुक्त है किन्तु तानाशाही का भी उतना ही खतरा है। समस्याओ के त्वरित समाधान और तानाशाही का चोली दामन का संबंध होता है। यह तो अन्तिम विकल्प होना चाहिये। राहुल के मार्ग में कांटे बिछाने में मनमोहन सिंह, नीतिश कुमार और अरविन्द केजरीवाल के बीच तो कुछ सहमति भी बन सकती है किन्तु नरेन्द्र मोदी से इतनी सूझबूझ पर संदेह ही है। अभी उत्तर प्रदेश के चुनाव में अमेठी और रायबरेली ने जिस तरह राहुल और उनके पारिवारिक घमंड को चकनाचूर किया वैसा ही चमत्कार पूरे भारत की जनता को चुनावों में कर के दिखाना चाहिये तभी भारतीय लोकतंत्र पर दिख रहे राहुल खतरे से मुक्ति संभव है।
नोटः– मुझे लगता है कि आपने या तो मेरे उपरोक्त दोनों लेख पूर्व में नही पढें अथवा पढ़कर भी परिस्थितिवश भूल गए। अब आपका पत्र आने के बाद समीक्षा करने में सुविधा होगी कि मैं गलत हूँ या आप?

(2)मुकेश कुमार अग्रवाल,कटघोरा,जिला–कोरबा,छ.ग.ज्ञानतत्व 12396

प्रश्नः—ज्ञानतत्व मिलता है। मेरा अनुभव है कि संविधान में संशोधन आज देश की मुख्य ज्वलंत समस्या है किन्तु सभी सर्वोच्च सदनों पर बैठे हुए राजनेताओं के द्वारा उक्त विषय पर लंबी एवं सार्थक बहस क्यों नही की जाती? और अगर आपके ध्यानकर्षण में की जाती हैं तो उपरोक्त विषय पर आज दिनॉक तक क्या निष्कर्ष निकला है? और क्या संशोधन हुआ है एवं किन मुख्य ऐसे संविधान है जिन पर संशोधन होना नितांत आवश्यक है। कृपया हमारी जिज्ञासा का उत्साहवर्धन करें।

उत्तरः—भारतीय संविधान राजनेताओं के लिए अपने आर्थिक,सामाजिक हितों की पूर्ति का माध्यम बना हुआ हैं। भारतीय संविधान को भारत के राजनेता संसद के माध्यम से अपनी कैद में रखकर उसका दुरुपयोग करते रहते है। संसद में जो बैठे हुए लोग है वे जो भी बहस करते है, जो भी निर्णय करते है ,जो भी संविधान संशोधन करते है, वह सब भारत की आम जनता अर्थात् समाज को धोखा देकर उसे गुलाम बनाने के लिए होता है। साथ ही उनका यह भी उद्देश्य होता है कि भारत की जनता को कुछ सुख –सुविधा देकर उन्हें संतुष्ट रखा जाये। भारतीय राजनीति दो दिशाओं में लगातार सक्रिय है–(1)स्वयं को शक्तिशाली तथा समाज को कमजोर करते जाना।(2)समाज को रोटी और सुविधा में उलझाकर संतुष्ट रखना। हमारे सभी राजनेता पूरी ईमानदारी से दोनों दिशाओं में दिन रात सक्रिय है। वैसे तो संविधान में बहुत से संशोधनों की आवश्यकता है किन्तु वर्तमान समय में संविधान में पहला संशोधन यह होना चाहिए कि वर्तमान संसद के संविधान संशोधन के असीम अधिकारों में किसी अन्य इकाई का हस्तक्षेप हो। लोकतंत्र की परिभाषा लोक नियुक्त तंत्र से बदल कर लोकनियंत्रित तंत्र करने की दिशा में यह पहला कदम होगा। भारत का हर राजनेता पूरा जोर लगायेगा। कि भारत की जनता उससे सुविधाएँ चाहे जो ले ले किन्तु उनके अधिकारों में किसी प्रकार की कोई कटौती न करे। अब हमारे लिए उचित है कि हम राजनेताओं से सुविधाएँ न मॉग कर अधिकारों की मॉग करें।

(3)कृष्ण कुमार खन्ना,मेरठ, उ0प्र0 ज्ञानतत्व–9426

प्रश्नः—आपका छपा हुआ पत्र मिला जिसमें लोक जिला ,लोक प्रदेश,गॉव का जिक्र है। व्यवस्था परिर्वतन अभियान में आप जिस लगन से काम कर रहे है वह लगन सराहनीय है। इतने लगन से और कोई काम करता हिन्दुस्तान में दिखता नही इसलिए यह पत्र आप को लिख रहा हूॅ। पहले मैने 1—15 अगस्त 2015 के ज्ञानतत्व को पढ़कर यह पत्र लिखने का विचार समाप्त कर दिया था क्योंकि आपने उसमें लिखा है कि मैं दो नम्बर का व्यक्ति हूॅ। अब दो नम्बर के व्यक्ति को क्यों एक नम्बर की बात लिखी जाये। फिर ख्याल आया कि एक नम्बर की बात तो लिख ही देनी चाहिये दो नम्बर का व्यक्ति उसे माने या न माने यह उसकी मर्जी पर छोड़ देना चाहिये।

अब आपने एक कार्यालय दिल्ली में खोला है। पहले आप स्वयं दिल्ली में आकर बैठे थे। उसमें आपके काम के व्यवस्था परिवर्तन के कामों की क्या प्रगति हुई थी, जो आप दिल्ली में नया कार्यालय खोलने से आशा करते है। आपके काम का फैलाव विज्ञापन प्रचार के लिये ज्यादा है, उसमें से ठोस कार्य कम ही होता है। कभी आप यात्रा निकालते है,उसमें भी प्रचार का काम ज्यादा होता है। जब यात्रा निकल जाती है पीछे कुछ काम करने के लिये छोड़ नही जाते उन लोगों के लिए जो आपके सम्पर्क में आते है। उस यात्रा के दौरान आप लोक प्रदेश बना लें,गॉव भी बना लें लेकिन उसमें काम क्या होगा यह चीज मुख्य देखने की है। उन्हे लोक जिला का नाम दे दें। नाम से नही काम से व्यवस्था परिवर्तन का काम होगा। करने के काम कम से कम दो हैं—(1)भ्रष्टाचार को रोकना जिसे आप भ्रष्टाचार मानते हैं और जिसे समाज का बड़ा वर्ग भ्रष्टाचार मानता है। समाज में जाकर उसे रोकना।(2)दूसरा सफाई । गॉव और शहर साफ होने चाहिये इस की व्यवहारिक कोशिश करना।

इन दो कामों के अलावा और जो काम लोक जिले के कार्यकर्ता को सौंपे वह काम करें। बातों से और प्रचार प्रसार से काम चलने वाला नहीं। काम करने से काम होगा और व्यवस्था परिर्वतन का काम होगा। परिवार में सब लोगों को प्रणाम जिन्होने आप को व्यवस्था परिर्वतन के काम करने की छूट दे रखी हैं।

उत्तरः— मैं आपको बहुत पहले से जानता और मानता रहा हूॅ। चूॅकि आप पूरी तरह एक नं0 के व्यक्ति है इसलिए आपके प्रति पूर्ण सम्मान होते हुए भी मैं आपका अनुकरण नहीं कर पाता। यदि कोई दो नं0 का व्यक्ति मुझे ऐसी सलाह देता तो मैं उसे उत्तर भी नहीं देता। किन्तु आपके प्रति मेरे मन में अथाह श्रद्धा है फिर भी मैं आपकी सलाह को अव्यावहारिक मानकर छोड़ रहा हूॅ। आप सरकार को ईमानदारी से टैक्स देना अपना कर्तव्य समझते है, और मैं सरकार को मजबूरी में डर के कारण ईमानदारी से टैक्स देता हूॅ। मैं समझता हूॅ कि जब पूरा का पूरा तंत्र भ्रष्टाचार में उपर से नीचे तक डूबा हुआ है तो मैं ऐसे भ्रष्ट तंत्र को ईमानदारी से टैक्स क्यों दूॅ। मैं यदि डर से दे भी रहा हूॅ तो मैं किसी अन्य को यह गलत सलाह नहीं दे सकता। गाय की रोटी,कुत्ता खा रहा है, गाय को ऑख दिखा रहा है, और मैं ऑख मूॅदकर गाय के नाम पर चक्की पीसता रहूॅ जिसके परिणाम में कुत्ता खा खाकर मोटा हो रहा है। तो भले ही आप अपना कर्तव्य समझकर आटा पीसते रहे और कुत्ता खाता रहें किन्तु मैं तो ऐसा करने के पक्ष में नहीं ।

मृत महापुरुषों के विचार बिना विचार मंथन किये अनुकरण करना अनुचित, निरर्थक और कभी कभी घातक भी होता है। मैं भी गॉधी जी का प्रशंसक रहा हूॅ किन्तु गॉधी जी ने अपनी मृत्यु के पूर्व जो कहा उससे आज की देशकाल परिस्थिति के साथ समीक्षा करके ही अनुकरण करना चाहिए, ऑख मूॅदकर नहीं। आप गॉधी का आज भी अक्षरशः अनुकरण कर रहे है और मैं वर्तमान स्थिति में गॉधी क्या करते इसका आकलन करके संशोधित मार्ग पर चल रहा हूॅ। मैंने आपको कभी अपना मार्ग छोड़ने की सलाह नहीं दी,क्योंकि मैं जानता हूॅ कि आपकी नीयत साफ है, प्रयत्न समाज और सरकार के लिए लाभदायक है भले ही वे समाधान कारक न हो। यदि किसी टी बी पेसेंट को दवा की अपेक्षा प्रातः भ्रमण की सलाह भी कोई दे तो लाभदायक है किन्तु समाधान नहीं। मैं समाधान की दिशा में बढ़ रहा हूॅ। आपका कर्तव्य है कि यदि मैं गलत नहीं हूॅ तो मुझे प्रयोग करने से मत रोकिये। मैं सत्य और अहिंसा के प्रति उसी तरह अडिग हूॅ जैसे गॉधी किन्तु मैं अपने को हर मामले में गॉधी का अनुकरण करना ठीक नहीं समझता। फिर भी आप कर रहे है वह गलत नहीं है आप मुझे रोक रहे है यह गलत है। आवश्यक नही कि गॉधी अंतिम महापुरुष हो गये हो और भविष्य में कोई गॉधी से कुछ मामलों में हटकर कोई अन्य मार्ग न बता सके। आशा है कि आप मेरी नीयत को समझेंगे । मुझे उम्मीद है कि हम आप एक दूसरे की सहायता करते रहेंगे।

किसी कैंसर के अस्पताल में मरीजों का इलाज करने वाले डाक्टर की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है तो इसका यह अर्थ नही है कि कैंसर का टीका खोज रहे वैज्ञानिक की भूमिका कम महत्वपूर्ण है। आप इलाज कर रहे है और मैं अनुसंधान कर रहा हूॅ । दोनो ही कार्य समान रुप से महत्वपूर्ण है। इलाज का परिणाम तत्काल दिख जाता है और अनुसंधान का परिणाम बहुत बाद में दिखता है। परन्तु अनुसंधान का परिणाम दूरगामी होता है यह बात नही भूलनी चाहिए । यह सही है कि मैने जीवन भर लोकस्वराज्य के लिए भरपूर प्रयत्न किये। दिल्ली में कार्यालय खोला, यात्रायें निकाली। और अब भी अपने प्रयत्न में लगा हुआ हूॅ इस उम्मीद के साथ कि जल्द ही भारत में लोकस्वराज्य की दिशा में व्यवस्था परिर्वतन हो जायेगा। दूसरी ओर आप भी उतनी ही मेहनत से भ्रष्टाचार रोकने में लगे है। आपने न्यायालय में भ्रष्टाचार रोकने के लिए प्रयास किये। आपने दिल्ली में भी प्रधानमंत्री मुख्यन्यायधीश के समक्ष धरना दिया। मैं असफल हूॅ किन्तु यदि आपके प्रयत्नों से कुछ सफलता दिखती तो मैं अपना काम छोडकर आपके साथ जुडने पर सोचता। किन्तु मैं स्वयं आपके प्रयत्नों को भूसा कूटकर दाना निकालने की उम्मीद करने से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं मानता। मेरे विचार से भ्रष्टाचार के अवसर जानबूझ कर पैदा किये जा रहे है। जो सरकारी कर्मचारी घूस देकर नौकरी पा रहे है उनके खिलाफ आप घूस न लेने का आन्दोलन चला रहें है। मैं इसे न्याय संगत नहीं मानता। भ्रष्टाचार रोकने की पहल वहॉ से होनी चाहिये जिसे हम चुन कर भेजते हैं। जब हमारा नियुक्त व्यक्ति ही भ्रष्ट है तो उस भ्रष्ट व्यक्ति के द्वारा नियुक्त किया गया व्यक्ति ईमानदार कैसे हो सकता हैं। मैं तो एक गॉव शहर की सफाई में उन लोगो को लगने की सलाह दे रहा हूॅ जो व्यवस्था परिर्वतन का काम नहीं कर रहें या नहीं कर सकते । जो लोग व्यवस्था परिर्वतन के काम में लगे हैं उन्हें मैं भ्रष्टाचार रोकने या साफ सफाई के काम में लगने की सलाह नहीं दे सकता। गिलहरी का काम भी महत्वपूर्ण है और नलनील हनुमान का भी। नलनील या हनुमान को अपना काम छोड़कर गिलहरी के समान काम करने की सलाह देना मेरे विचार से ठीक नहीं। मैं तो चाहता हूॅ कि आपकी सफलता की कामना करुॅ तथा सहयोग देता रहूॅ साथ ही आपसे उम्मीद है कि आपका भी सहयोग समर्थन मिलता रहेगा।

(4) राजेन्द्र भारतीय,इन्दौर,म0प्र0 ज्ञानतत्व 40376

प्रश्नः—आपके ज्ञानतत्व को मैं बहुत ही उत्साह और रुचि से पढ़ता हूॅ किन्तु पत्रिका कभी मिल पाती है और कभी नही। आपके विचार तार्किक होते है,व्यावहारिक होते हैं। दिल्ली के उपराज्यपाल नजीब जंग तथा मुख्यमंत्री केजरीवाल के बीच जो टकराव चल रहा है उस पर आपके विचार आने चाहिए।

ज्ञानतत्व 318 में आपने प्रथम पृष्ठ की पत्रिका में यह लिखा है मैं नरेन्द्र मोदी का अंधसर्मथक हूॅ। मैं आपकी कतिपय (3—4)पुस्तको और पाक्षिक ज्ञानतत्व पत्रिका के माध्यम से आपके लेखान्तर्गत भाव,विचारों,चिन्तन मनन,की प्रक्रियाओं से थोड़ा बहुत जुड़ा हुआ हूॅ। प्रायः मैने आपको सद्चिंतक निष्पक्ष विचारक के रुप अनुभूत किया है मगर आपके लिखित उक्त वाक्य ने मुझे यह जानने समझने के लिए प्रेरित कर दिया कि एक विचारक और विवेकी व्यक्ति किसी का अंध समर्थक कैसे हो सकता है? जिन विचारों की कसौटी पर किसी अन्य व्यक्ति के सत्य ज्ञानमय मानवतावादी जगत हितकारी भाव विचार कार्यों के आधार पर हम उसके प्रति श्रद्धा भक्ति भाव से बहुत प्रशंसक,समर्थक तो हो सकते है मगर किन्ही परिस्थितिवश उसके जीवन मूल्य बदल जायें धनप्रद वैभव यश प्रतिष्ठा लाभ में असत्य आचरण करने लग जाये,जनहित की बात गौण कर वह निजी हितों को प्रमुखता देने लगे,जनता का सत्यार्थ दर्शन न रहे तो क्या तब भी एक सद्विचारक उसका समर्थक रह सकता है। अन्ध समर्थक शब्द का मेरे विचार से यही अर्थ होता है कि बिना सोच विचार किये जिसे किसी कारण अपना पूज्य मान लिया है उसके भले बुरे कामों की तरफ से लापरवाह होकर मूढ़ भावना के आधार पर उसकी सब बातों को मान कर तद्नुसार कार्य करते जाना। कृपया मेरे इस विचार पर अपना अभिमत प्रदान कर अनुग्रहीत करेंगे।

उत्तरः—दिल्ली के उपराज्यपाल तथा अन्य सभी इकाईयों को कानूनों की पूरी जानकारी है। किन्तु अरविन्द केजरीवाल या तो कानूनों के जानकार नही है अथवा जानबूझकर ऐसा नाटक कर रहें है। मैं पिछले पॉच सात वर्षों से उनके निकट रहा हूॅ। मुझे पूरा विश्वास था कि अरविंद केजरीवाल इसलिए यह सब कर रहे थे कि केन्द्र सरकार और राज्यपाल मिलकर उन्हें बर्खास्त कर दें और वे शहीद होने के नाम पर देश भर में जागृति पैदा करें। अरविंद जी सीधे प्रधानमंत्री बनना चाहते है धीरे—धीरे नहीं। क्योंकि उन्हें विश्वास है कि धीरे—धीरे यदि आगे बढ़े तो प्रारंभिक असफलता उन्हें सदा के लिए असफल बना

देगी। केन्द्र सरकार ने उनके मनसूबों पर पानी फेर दिया और उन्होने चाहे जो भी गैर कानूनी काम किया उसमें केन्द्र सरकार ने सिर्फ कानून सम्मत काम किया और उन्हें बर्खास्त नहीं किया। अरविंद केजरीवाल अपने को पराजित महसूस कर रहें है। जिस दिन उन्होने सरकारी कार्यालय पर ताला बंद किया था उसी दिन मैंने उस कदम को गलत बताया था। किन्तु बाद में मुझे जब योजना का आभास हुआ तब मैंने चुप रहना उचित समझा। स्पष्ट है कि अरविंद केजरीवाल की योजना अन्य विपक्षी राजनेताओं के समान हो गई है जो नरेन्द्र मोदी का मुकाबला नहीं कर पा रही है।

आपने अन्ध समर्थक शब्द पर पूछा है। आपने लिखा है कि और कहीं मैंने भावनावश अशुद्ध तो नही लिख दिया। आंशिक रुप से आपका कथन सच है अन्ध समर्थक के स्थान पर मुझे यह लिखना चाहिए था कि वर्तमान समय में नरेन्द्र मोदी जिस तरह कार्य कर रहें है उस कार्य में पिछले सभी प्रधानमंत्री की तुलना में मैं अन्ध समर्थक सरीखा हो गया हूँ। यह भी कि मैने अंधसमर्थक लिखा है अंधभक्त नही। भक्ति पूरी तरह भावनाओं पर आश्रित होती है और समर्थन में समीक्षा की गुंजाइश भी रहती है। मेरा कहने का आशय यह नही है कि वर्तमान में मैं ऑख मूँदकर उनकी हर बात की प्रशंसा करुँगा। मैं उनके अच्छे बुरे की तटस्थ समीक्षा करता रहूँगा। किन्तु इसके साथ–साथ यह भी स्पष्ट है यदि विपक्षी दल मोदी की किसी भूल या गलती की भी आलोचना करेंगे तो मैं ऐसी आलोचना में चुप रहूँगा। उनका साथ नहीं दूँगा। मैं शुरु से मानता रहा कि भूमि अधिग्रहण बिल ठीक नीयत से और आवश्यकतानुसार लाया गया है। मैं यह समझता था कि चार गुना मुआवजे का प्रावधान इतना अधिक है कि किसानों की बिना सहमति अधिग्रहण के नियम की कोई आवश्यकता नहीं थी। यदि चार गुना मुआवजा दिया जाये तो देश की अधिकांश जमीन बिना अधिग्रहण के सरकार को मिल जाएगी किन्तु मोदी जी अधिग्रहण पर अड़े रहे जो अव्यवहारिक होते हुए भी मैं चुप रहा क्योंकि मैं नही चाहता था कि नीयत खराब विपक्ष इसका लाभ उठावें। मुझे विश्वास था कि अंत में यह प्रावधान खतम होगा। किन्तु यदि शुरु में ही ऐसा हो गया होता तो अच्छा होता। मैं स्पष्ट कर दूँ कि अंधसमर्थक का अर्थ विपक्षी दलों,भारतीय जनता पार्टी तथा संघ परिवार की तुलना में नरेन्द्र मोदी के कार्यों का समर्थन करना है। किन्तु यदि कोई अन्य तटस्थ विचारक नरेन्द्र मोदी की स्वस्थ आलोचना करेगा तो मैं गुण दोष के आधार पर उचित अनुचित का निर्णय करुँगा। नरेन्द्र मोदी ने कन्या भ्रूण हत्या का जमकर विरोध किया है और कर रहे है जबकि मैं महिला और पुरुष के किसी भी प्रकार के कानूनी भेदभाव के विरुद्ध हूँ। उनका यह कार्य गलत होते हुए भी मैं अब तक इस संबंध में चुप ही हूँ किन्तु यदि किसी तटस्थ व्यक्ति ने यह बात उठायी तो मैं उसका समर्थन करुँगा।

(5)राजेन्द्र प्रसाद,व्याख्यता, मनोविज्ञान,मधुबनी,बिहार, ज्ञानतत्व 24460

प्रश्नः— किसान आत्महत्या और भूमि अधिग्रहण कानून पर आपके विचारों ने काफी कुछ सोचने को मजबूर किया। मेरी नजर में इसका मूल कारण भूमि अधिग्रहण कानून और भूमि खरीद बिक्री करने वालों की भूमिका से संबंधित है। बड़े लोग अपने बुद्धि और पैसे से भ्रष्टाचार का फायदा लेकर जमीन छीन रहे है जो कष्टप्रद है।

उत्तरः— यदि भूमि का चार गुना मुआवजा दिया जाये तो अधिग्रहण की आवश्यकता ही नही रहेगी। किन्तु मैं आपसे सहमत नही कि बुद्धि और पैसे से भ्रष्टाचार का फायदा उठाकर जमीन छीनी जाती है। यदि कोई व्यक्ति बुद्धि और धन के द्वारा किसी व्यक्ति की जमीन खरीद लेता है और दोनों के बीच सहमति बन जाती है तो इसमें भ्रष्टाचार अथवा छीनने जैसा शब्द क्यों घुसना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति ने भ्रष्टाचार के द्वारा भी धन कमाया है तो उसका भ्रष्टाचार कानूनी अपराध है। जिसका दण्ड उसे कानून दे सकता है। किन्तु जमीन बेचने वाले के साथ उसका कोई अन्याय नहीं है, जब तक किसी मामले में जोर जबरदस्ती न करके सहमति से खरीद बिक्री होती है, तो उसमें किसी तरह का कोई प्रश्न उठाया जा सकता। मजबूरी का लाभ उठाना अनैतिक तो हो सकता है किन्तु अपराध नहीं। अनैतिक को अपराध कहना किसी दृष्टि से ठीक नही है।

(6)गिरीशचन्द्र सिन्हा

प्रश्नः—श्री टिकाराम जी ने मुझे ग्राम सभा के विषय में कुछ समझाया। मुझे लगता है कि हम या इस प्रकार के समान विचार रखने वाले लोग ग्रामों एवं वहॉ के समाज में व्याप्त हो गई निष्क्रियता एवं उत्तरदायित्व हीनता को दूर नही कर

सकते। कोई माने या न माने लेकिन वर्ष 1947 में ग्राम समाज स्वावलम्बी था फलस्वरुप अपने उत्तरदायित्व को ठीक प्रकार से समझता था लेकिन वर्तमान में वह नेहरु से लेकर मोदी तक प्रदेश सरकार एवं केन्द्र सरकार का मुँह देखता है और हर पल अपेक्षा करता है कि उसके पालन–पोषण का उत्तरदायित्व सरकार पर बना रहे।

गत वर्षो में ग्राम्य समाज को अधिकांश करों के दायित्व से मुक्त कर दिया गया तथा लगान , सिंचाई, सम्पत्ति कर, सिंचाई कर, व्यवसाय कर, सस्ती मुफ्त बिजली, तथा मुफ्त मकान, मुफ्त अति सस्ता राशन, शिक्षा भोजन सहित अन्य दर्जनों वस्तुएँ। परिणामतः ग्राम्यवासी शनैः शनैः स्वावलम्बन से दूर होते गये जबकि सरकारों ने राजनैतिक लाभ के लिए यह छूटें तो प्रदान की किन्तु इस प्रकार की प्रदत्त सहायता की न्यूनता ने ग्राम्यवासियों का जीवन स्तर भिखमंगों जैसा कर दिया।

उपरोक्त परिस्थितियों में आप द्वारा उठाये गये चारों मुद्दे अत्यधिक प्रासंगिक है किन्तु इन चारों मुद्दो को प्रभावी बनाने के लिए ग्राम समाज का स्वावलम्बी होना एक अनिवार्य बात है। फलस्वरुप हमारे विचार विमर्श में यह भी शामिल होना चाहिए कि प्रत्येक ग्राम की अपनी कर प्रणाली हो उसकी वसूली के आधार पर ग्राम समाज को अपने विद्यालय , चिकित्सालय तथा क्षेत्रीय विकास के प्रबंधन का पूर्ण स्वतंत्र अधिकार हो। स्वाभाविक है कि इन समस्त कार्यों के लिए जिस बजट की आवश्यकता होगी यह यक्ष प्रश्न होगा। लेकिन हमें नही भूलना चाहिए कि संघीय ढांचे में राज्य एवं केन्द्र के बीच करों से प्राप्त आय का विभाजन होता है, ऐसे में ग्राम समाज को हिस्सा अलग किया जाना चाहिए किन्तु यहॉ यह भी महत्वपूर्ण है कि ग्राम समाज को प्रदत्त राशि विषय गत न होकर वार्षिक व्यव के एक मुफ्त भुगतान होना चाहिए।

उत्तरः—जिन जगहों की आबादी दो चार हजार से भी कम होती है तथा वहॉ आबादी का घनत्व भी कम होता है उन्हें गॉव कहते है। ऐसे गावों में रहने वाले व्यक्तियों को ग्रामीण कहते है। गावों पर कोई टैक्स नही है किन्तु गावों में रहने वाले ग्रामीणों के सभी प्रकार के उत्पादन और उपयोग की वस्तुओं पर भारी टैक्स है। यह टैक्स शहरों में इक्ट्टा होता है। इस टैक्स को अप्रत्यक्ष कर कहते है जो आमतौर पर देते तो ग्रामीण है किन्तु उनके नाम पर माना नही जाता। इस तरह ग्रामीणों से प्राप्त कर में से आंशिक सहायता देकर गाव या ग्रामीणों को सरकारे अपने पक्ष में करती रहती है। अंग्रेजों के आने के पहले देश गुलाम था समाज स्वतंत्र। अंग्रेजों के जाने के बाद देश स्वतंत्र हो गया और समाज गुलाम जिसका अर्थ है परिवार से लेकर गॉव जिला तक की गुलामी। गॉव के संचालन के क्या नियम हो यह बाद की चर्चा का विषय है। पहला विषय है गॉव को अपने आंतरिक मामलो में निर्णय करने की स्वतंत्रता। आपने जो सलाह दी है वह सलाह ठीक है। यदि इस प्रकार हो तो बहुत अच्छा है। हमारी जो परिवार, गॉव, जिले, को संवैधानिक अधिकार दिये जाने की मॉग है उस मॉग में राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी शामिल है।

(7) एम एस सिंगला,अजमेर,राजस्थान, ज्ञानतत्व–50060

प्रश्नः—ज्ञानतत्व 316 में भारतीय संविधान के बारे में नागपुर के श्री सुनिल तामगाडगे के विचार और उसके उत्तर में आपके विचार पढें। मैं इस झमेले में न जाकर संविधान के प्रति केवल बाबा साहेब के मनोभाव प्रस्तुत कर रहा हूॅ। भारतीय संविधान की स्थिति इस प्रकार है– 2 सितंबर 1953 को राज्य सभा में भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर का बयान–''लोग प्रायः कहते है कि मैं भारतीय संविधान का निर्माता हूॅ। मेरा जबाव है मैं तो हीक था। मुझे जो भी करने को कहा, मैंने अपनी इच्छा के विरुद्ध किया। मेरे मित्र कहते है मैंने संविधान बनाया। मैं यह कहने को बिल्कुल तैयार हूॅ कि मैं पहला व्यक्ति हूॅगा जो इसे जला देगा। मैं इसे नही चाहता । यह संविधान किसी भी व्यक्ति के लिए उपयुक्त नही है। आप इसे जलाना क्यों चाहते है? 19 मार्च 1955 के राज्य सभा में जबाव–आप इसका उत्तर चाहते है, हमने देवता के आगमन तथा उसके आवास के लिए एक मंदिर सजाया,परन्तु इससे पूर्व कि देवता यहॉ स्थापित हों,असुरों ने उस स्थान पर कब्जा कर लिया। अब क्या किया जा सकता है? सिवाय इसके कि मंदिर को ध्वस्त कर दिया जाय। हम नही चाहते कि इस पर असुरों का कब्जा हो जाय। हम चाहते है कि इसमें देवताओं का वास हो।

मंदिर को क्यों ध्वस्त करते हों, असुरों को क्यों नही निकालते? उत्तर– आप ऐसा नही कर सकते। हमारे में वह शक्ति नहीं आई कि असुरों को भगा दें।डॉ. अॅम्बेडकर शतपथ ब्राहमण ग्रन्थ में देवासुर संग्राम का वर्णन करते हुए। इस प्रकार अम्बेडकर संविधान का उपरी ढॉचा बनाने वाले थे, इसमें उनकी आत्मा न थी। सात सदस्यों की ड्राफ्ट कमेटी के सदस्यों में एक आध को छोड़कर प्रायः सभी इसकी प्रक्रिया के प्रति उदासीन थे। कमेटी में सात सदस्य नियुक्त किये गये थे–एक ने त्याग पत्र दे दिया,एक की मृत्यु हो गई,एक अमरीका चला गया जिसका स्थान नही भरा गया,एक अन्य राज्य के काम में व्यस्त रहा,एक दिल्ली से दूर रहता था जो स्वास्थ्य के कारण कभी उपस्थित न हो सका। इसके अलावा यह भी – 25 नव. 49 को अपनी अन्तरात्मा की पीडा के साथ तीन चेतावनियॉ दी थी–(क) क्या भारत दूसरी बार अपनी स्वतंत्रता गवाएगा? क्या इतिहास अपने को दोहराएगा?(ख)कही प्रजातंत्र निरंकुशता का स्वरुप न ले ले?(ग)उन्होने राजनीति प्रजातंत्र के साथ सामाजिक प्रजातंत्र लाने की बात कही। उन्होने कांग्रेस पार्टी से शक्ति के साथ बुद्धि और गरिमा से चलने का आग्रह किया। अम्बेडकर विकेन्द्रीकरण के समर्थक थे साथ ही एक मजबूत केन्द्र भी चाहते थे।संविधान संबंधी कुछ अन्य तथ्य (1)संविधान बनाने में तीन साल में 165 बैठकें हुई (2)इसमें 7,635 संशोधन रखे गए जिनमें से 2,473 पर विचार हुआ (3)इस पर 64 लाख रु.व्यय हुए (4)यह विश्व का सबसे बडा संविधान है।

उत्तरः– यह बात अर्धसत्य है कि डा अम्बेडकर वर्तमान संविधान से संतुष्ट नही थे। इसका अर्थ यह नही है कि वे वर्तमान संविधान में कुछ समन्वय की, लोकस्वराज्य की, अकेन्द्रीकरण की, श्रम मुल्य वृद्धि की, बात डालना चाहते थे। मैं तो समझता हूॅ कि डॉ अम्बेडकर वर्तमान संविधान को जितना वर्ग संघर्ष कालीन स्वरुप देना चाहते थे, उतना वे नही दे सके। संविधान लागू होने के बाद उन्होने जिस तरह हिन्दू कोड बिल को सर्वाधिक प्राथमिकता दी उससे यह स्पष्ट है कि वे स्वतंत्रता के बाद सवर्ण हिन्दुओं के साथ बहुत अधिक अत्याचार मूलक भेदभाव करना चाहते थे। डॉ. अम्बेडकर किसी भी रुप में समाज सशक्तिकरण के पक्ष में नहीं थे। उनके मन में राजनीति कूटनीति सत्ता लोलुपता रग रग में भरी थी और इसकी पूर्ति के लिए वे महिलाओं मुसलमानों आदिवासियों हरिजनों बौद्धों का एक गुट बनाकर सत्ता प्राप्त करना चाहते थे। यह अलग बात है कि वे जैसा संविधान बनाना चाहते थे वैसा नही बना सके,और इसलिए उनकी इच्छाऍ अधूरी रह गई। डॉ अम्बेडकर जिस सन्दर्भ में असुर शब्द का उपयोग कर रहे है वह असुर शब्द दुष्टप्रवृत्ति वालों के लिए नही है। वह असुर शब्द सिर्फ सवर्ण हिन्दुओं के लिए था। अम्बेडकर एक दूर दृष्टि वाले सत्ता लोलुप व्यक्ति थे अतः उन्होने विकेन्द्रीकरण और मजबूत केन्द्र के विषय में क्या कहा, क्यों कहा ये वे जाने और आप जाने। मुझे यह पता नही है।

(8)सुनील संतोष राव तामगाडगे,53 राधाकृष्णनगर,हुडकेश्वर रोड़ नागपुर,महाराष्ट्र

प्रश्नः–बजरंगलाल जी आपका खत मिला,मैं उसे पढ़कर संतुष्ट नही। शायद आपको मेरा भेजा हुआ खत समझ में नही आया। आप कहते है कि आप संविधान के जानकार है,और उस पर आपने जो कसौटी बताई है, मैं पढ़कर हैरान हूॅ कि आपको यह मालूम ही नही कि संविधान महज एक दस्तावेज है। जिसका पालन करना न करना उन लोगों पर निर्भर है जो उसे लागू कराते है,उसके पालन की बात करते है। यदि वे लोग अच्छे होंगे तो चाहे संविधान बुरा हो वे अच्छा ही करेंगे। यदि वे अच्छे न हो तो चाहे संविधान अच्छा हो वे बुरा ही करेंगे। क्या आपको इतना भी नही पता कि आप समानता का विरोध करते है और असमानता का समर्थन करते है। क्या आपको इतना भी नही पता कि आज भारत के लोग दो विरोधी विचारधाराओं से शासित हो रहे है। उनका राजनैतिक आदर्श जो संविधान की भूमिका में निहित है स्वतंत्रता समानता तथा भातृत्व के जीवन को समर्थन करता है,किन्तु उनका सामाजिक आदर्श जो उनके हिन्दू नामक अधर्म में है उनको अस्वीकार करता है।'' क्योंकि हिन्दू अधर्म की वर्णव्यवस्था असमानता पर आधारित है,लेकिन भारत की संवैधानिक व्यवस्था समानता पर निर्मित है। अतः भारतीय संविधान तथा हिन्दू वर्णव्यवस्था में मौलिक विरोध है। एक को स्वीकार करना दूसरे को निषेध करने के बराबर है। इसलिए दोनों में से किसी एक को ही चुनना होगा। और यदि आप हिन्दू अधर्म को चुनते है तो आप संविधान विरोधी होते है इस लिहाज से आप भारत के सबसे बडे गद्दार है। यह जो आपने लिखा है वह जातीयवादी मानसिकता से लिखा गया है। जबकि मैं आपकों बता चुका हूॅ कि मैं ऐसी मानसिकता से नही सोचता। मैंने आपके सामने सत्य बयॉ किया है। जिसे आप और आप जैसे जातीयवादी कभी समझ ही नही सकते। इसलिए मैं आपको पहले भी कह चुका हूॅ कि आपका

दिमाग किसी उल्टे घडे कि तरह है जिसमें कभी भी पानी जा ही नही सकता। ऐसे उल्टे घडे को फोड देने में ही समझदारी है। ऐसा कौन करेगा यह बाद की बात है। फिलहाल आप एक काम कीजिए सत्य और निष्पक्षता का जो ढोंग आप कर रहे है,उसे बंद कर दीजिए । इसी में आपकी भलाई है। सदा आपका भला चाहने वाला।

उत्तरः—मैं संवाद करने के चार प्राथतिकताओं पर ध्यान रखता हूॅ —(1)समीक्षक (2)आलोचक (3)विरोधी (4)शत्रु। समीक्षक जो भी लिखता है उसका उत्तर मैं अवश्य देता हूॅ। यदि समीक्षा कटु भाषा में होती है तो मेरा उत्तर भी कटु भाषा में होता है। आलोचक जो भी लिखता है उसका मैं उत्तर सतर्कता पूर्वक देता हूॅ। यदि आलोचना किसी विषय को लेकर हो तो उस पर कितना भी लम्बा संवाद हो सकता है। किन्तु यदि आलोचक व्यक्तिगत आलोचना शुरु कर दें तो मैं व्यक्तिगत विषय को संवाद से अलग कर देता हूॅ। मुकेश कुमार ऋषिवर्मा आलोचना करते करते व्यक्तिगत आलोचना करने लगे तो मैने उनसे व्यक्तिगत मामले में संवाद बंद कर दिया। क्योकि ज्ञानतत्व विचार मंथन की पत्रिका है मन की भडास निकालने वाली नहीं। यदि किसी की भावना विरोधी के समान दिखती है तो मैं उससे कम संवाद करना चाहता हूॅ और यदि संवाद कर्ता शत्रु की श्रेणी में आ जाये तो उसके साथ संवाद तत्काल बंद कर देना चाहिए । मैं सुनिल तामगाडगे जी को आलोचक की श्रेणी में मानता था और इसलिए उनके किसी किसी पत्र का उत्तर दे देता था। किन्तु इस बार के पत्र में उन्होने'' आपका दिमाग किसी उल्टे घडे की तरह है जिसमें कभी भी पानी जा ही नही सकता। ऐसे उल्टे घडे को फोड देने में ही समझदारी है। ऐसा कौन करेगा यह बाद की बात है'' लिखकर मुझे सावधान कर दिया है कि मैं उनके साथ भविष्य में कोई संवाद न करु। गॉधी जी गोडसे के साथ संवाद करने की भूल कर रहे थे। मैं गॉधी जी की इस भूल को दोहराना नही चाहता और इसलिए मैं अपने दिमाग को फूटने से बचाने के लिए आपके साथ भविष्य में किसी प्रकार का संवाद बंद कर रहा हूॅ।

(9)बाबूलाल शर्मा,संयोजक, भारतीय मतदाता मंच बांदा उ0प्र0, ज्ञानतत्व—4841

प्रश्नः—इस बार का अंक हाथ लगा। बिना ब्रेक के पढ़ डाला। इसलिए नही कि कोई बडी वैचारिक खुराक क्षुधा को शांत करेगी वरन् इसलिए कि जो 22 साल से लगातार राष्ट्र को खुराक के रुप में परोसी जा रही है उसका सम्पादक यानी आप'' के लिए किये गये परिर्वतन की दावेदारी प्रस्तुत कर सर्वोपरी तो प्रभावित नही कर रहे। मैं सत्ता एवं व्यवस्था में आये परिर्वतन की दावेदारी प्रस्तुत कर चुका हूॅ। अपने से वरिष्ट केवल आपको मानता रहा। शेष बाद में आये कुछ टिम टिमाये और विलुप्त हो गये,जबकि आप मेरे से पहले से रहे और बने हुए है। मैं अकेला रहा, ना किसी से पैसा, ना किसी से सहयोग, अपने ही पैसे से बीस साल में 99 परिवर्तन के अंक प्रकाशित कर परिस्थिति वश रस्साकसी— राष्ट्रीय समाचार पत्रिका का सम्पादक बन कर एक लेख एवं अन्यों के आलेख प्रकाशित कराने में लग गया।

आज तक जो हो चुका है,हो रहा है, जो सराहा एवं स्वीकारा जा रहा है उसमें भारत में भरत राज की स्थापना हेतु देश में प्रत्येक चुनाव क्षेत्र में चार पांच भरतो की खोज। ''ना तो खायेंगे। ना ही खाने देंगे'' की मुहिम के संचालक आप रहे है। सब सुधरेगे। तीन सुधारे। नेता कर, कानून हमारे,के नारे वाली कार मेरे दरवाजे पर 2011 एवं 2012 में दो दोरात खडी रही। यहॉ के हजारों लोगों ने ऑखों से देखी। देखने वालों ने मुझे परिवर्तन का कर्ता धर्ता मान लिया। उस परिर्वतन की दावेदारी ढो रहा हूॅ तो किसी को आपत्ति नही बल्कि अच्छा लगता है। स्वीकार लिया जाता है। एक प्रतिद्वंदी के रुप में आप दावेदारी करने के हकदार है लेकिन जब आप भी नही तो मैं हूॅ।

सृजन के क्षेत्र में 22 साल का त्याग तप कम नही। व्यवस्थायें सृजन से ही बदला करती है। तन मन धन लगातार रहने को मैं त्याग और निरन्तर लगे रहने की निरन्तरता को तप मैं मानता हूॅ। त्यागी और तपस्वी जो कहता या लिखता है उसको मानने के लिए व्यवस्था और समाज मजबूर होता है। ऐसी स्थिति में आप जैसे त्यागी तपस्वी का कार्य विचार विवेचना समीक्षा प्रस्तुत करने से हट कर अब आपको व्यवस्था एवं समाज के लिए आदेश पारित करने में लगना है। आरक्षण राष्ट्र का कोढ़ है। राष्ट्रीय कार्यक्षमता को शून्य पर अटकाये हुए है। आरक्षण के इस कोढ़ को जड से मिटाने समूल समाप्त करने के लिए परिवर्तन 100 तैयार हो रहा है। किसी पार्टी सरकार या कोर्ट से इस कोढ को मिटाने की अपेक्षा करना निराधार है। दूसरी

ओर संसद से अपराधियों को बाहर करने का कार्य तो हुआ।उल्लेखनीय समाज सेवा करने वाले ईमानदार कार्यकर्ताओं को संसद में पहुचाने का कार्य क्षेत्र इसके लिए परिर्वतन अंक 101 की तैयारी है।

नया आरक्षण जिसमें आरक्षण का कोढ को मिटाने के लिए उल्लेखनीय समाज सेवा में लगे व्यक्तियों को संसद पहुॅचाने का वातावरण सृजित करना है। इसके लिए भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा संविधान की स्वर्णजयंती वर्ष समारोह दिनॉक 26–1–2000 को मुख्य अतिथि के रुप में दिये गये वक्तव्य को आधार बनाना है। वक्तव्य है कि ''हमारे भारत के चुनावों की स्थिति ही ऐसी है कि जिसके चलते उल्लेखनीय समाज सेवा करने वाला ईमानदार कार्यकर्ता चुनाव लड़ना जीतना तो दूर चुनाव लडने का सपना तक नही देख पाता है।

इस वक्तव्य से स्प्पट है कि उल्लेखनीय समाज सेवा करने वाले आप और मेरे जैसे वे हजारों ईमानदार कार्यकर्ता जिन्हें भारत के लिए निर्मित्त किया है ऐसे हम सभी चुनाव लडने को तैयार नही क्यों? क्योंकि विधिविधान नही। अब विधि विधान है, नियोक्ता श्रेष्ठता को वरीयता देने को तैयार है तो उल्लेखनीय समाज सेवा करने वालों को भी चुनाव लड़ने और जीतने का माहौल बनाना है। जिस दिन संसद में दस प्रतिशत ईमानदार हो गये आरक्षण को मिटाने का मुद्दा उठ जायेगा। ऐसा विश्वास है।

पूर्व संसद में बैठे सांसदो में से दो तिहाई को बाहर करने बेदागो को लाने एक ही पार्टी को स्पष्ट बहुमत दिलाने की रणनीति तो दशहरा 2010 को वृन्दावन में व्यासों और जीवन दानी उल्लेखनीय कार्यकर्ताओ की बैठक में तय हो चुकी थी। लेकिन वकॉल वाजपेयी के वक्तव्य इस संसद में चुन कर आये भी उल्लेखनीय सेवा करने वाले ईमानदार नही है। उन्हे संसद में लाने की मुहिम इन सांसदो को अनुशासित रखने के लिए भी जरुरी है। संविधान की परिपूर्णता के लिए उल्लेखनीय समाज सेवा करने वाले ईमानदार कार्यकर्ताओं की पहचान स्पष्ट करने हेतु सुप्रीम कोर्ट को 9–5–2015 को पत्र प्रेषित किया गया है उसे हम और आपको हवा देनी है ताकि वास्तविक मालिक भी आगे आने को सक्रिय हो सके। अंक 315 के पृष्ट 14 पर विधायिका में विचारवान लोगो को पहुॅचाने का मुद्दा आपने भी उठाया है। उसी सन्दर्भ को बढाते हुए यह बात कही जा रही है।

नियोक्ता लोक में संयोजक रुप में विगत दो दशक में विशेष कर 1999 से 2014 के मध्य जो हुआ है उसके तारतम्य में मैं मानता हूॅ कि किसी को ताज पहनाने या उतार लेने की जिम्मेदारी मेरी है। विधायिका से कार्य भी मुझे लेना है इसलिए मैं यह सब लिख रहा हूॅ ।

पुनः स्पष्ट करु कि सृजक के प्रतिबंध के रुप में अब अधिक नही आप और मैं खडे है। एक दुजें को समझ नई नई व्यूह रचना करने हेतु हमे आगे आना चाहिए। तत्व से कही अधिक लोक को महत्व देना है। न्यायपालिका विधायिका के द्वारा बनाये गये कानूनों की समीक्षा करने को,विधायिका कानून बनाने को और मैं भारतीय मतदाता मंच में संयोजक के रुप में कानून बनाने को अधिकृत हूॅ। इसी अहसास से सत्ता व्यवस्था , धर्मसत्ता, शिक्षा व्यवस्था, संस्कृति एवं समाज को नियंत्रित करने की जिम्मेदारी मेरी है। क्योंकि मैं मूलतः कृषक सृजक शिक्षक एवं नेता हूॅ लेता नही केवल देता हूॅ।

उत्तरः— आपका पत्र पढकर मुझे संतोष हुआ। हमारे साथियों ने भी आपके विषय में बहुत कुछ बताया है। आपमें सभी गुण है और ऐसे लोगो को राजनीति में जाकर न केवल आरक्षण जैसी बीमारियों का समाधान करना चाहिए,बल्कि साम्प्रदायिकता, जातीय कटूता, मानव स्वभाव ताप वृद्धि,मानव स्वभाव स्वार्थ वृद्धि, आर्थिक असमानता, श्रम शोषण जैसे विषयों पर भी आगे आकर काम करना चाहिए। परिवार व्यवस्था को तोड़कर महिला सशक्तिकरण का नारा लगाने वाले समाज तोडक राजनेताओं को भी कमजोर करना होगा। मुझे विश्वास है कि आप यह काम कर सकेंगे। मेरा पूरा समर्थन और सहयोग रहेगा कि आप आगे बढे, संसद में जायें, मेरी इच्छा पूरी करें।

किन्तु मैं ब्राहमण हूॅ और अब ब्राहमण से भी आगे जाकर वानप्रस्थी हो गया हूॅ। मेरी सफलता इस बात से नही आंकी जायेगी कि मैं संसद में जाकर समस्याओं का समाधान करुॅ। मेरी सफलता इस बात में आंकी जायेगी कि मैं ऐसे योग्य लोगों को तैयार कर सकू जो व्यवस्था परिवर्तन कर सकें। विश्वमित्र की सफलता का आकलन राम बनकर रावण को मारने में नहीं

था बल्कि राम को तैयार करके राक्षषी प्रवृत्तियों के नाश की परिस्थितियॉ पैदा करने में था। आप अपनी भूमिका निभाते रहिये मैं अपनी भूमिका में आपसे पीछे नहीं दिखूँगा।